साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 43, अगस्त(द्वितीय) , 2018

पुष्प की सुगंध ही पुष्प का चारित्र्य!

लेखक: पद्मश्री डॉ.गुणवन्तभाई शाह
अनुवादक: डॉ.रजनीकान्त एस.शाह

मनुष्य जैसा विचित्र प्राणी गुलाब से उसकी महक छिन ले तब जो सुंदर गुलाब शेष रह जाए वह तो गुलाब का शव होता है। मनुष्य अधिकांश अपनी नाक से उस शव को छूता है।

वर्ष 1979 में घटी घटना याद है। ब्रिटन से दक्षिण गुजरात यूनिवर्सिटी(सूरत) की मुलाक़ात हेतु प्रो.सिंपकिंस
आए थे।यूनिवर्सिटी के केम्पस में सुंदर मजेदार गुलाब खिले हुए थे।एक लाल गुलाब को सूंघने के बाद प्रो.सिंपकिंस ने एक बात कही थी,जो अभी भी याद है। उन्होंने कहा,` यहाँ के गुलाब में अभी भी खुशबू बची हुई है! हमारे यहाँ गुलाब का रंग बरकरार है और हाइब्रीड गुलाब का कद भी बढ़ा है,परंतु उसमें खुशबू बची नहीं है।'

नरसिंहराव भोलानाथ दिवेटिया ने `कुसुममाला' शीर्षक से जब अपना काव्यग्रंथ प्रकाशित किया तब एक समीक्षक ने उस पुस्तक में प्रकाशित काव्यों को `रसगंधवर्जित पाश्चात्य कुसुम' जैसे शब्दों से अवज्ञा कर दी थी। ये काव्य हमें कवि डॉ.जयंत पाठकजी ने पढ़ाये थे। मनुष्य जैसा विचित्र प्राणी गुलाब से उसकी महक छिन ले तब जो सुंदर गुलाब शेष रह जाए वह तो गुलाब का शव होता है। मनुष्य अधिकांश अपनी नाक से उस शव को छूता है। क्लियोपेट्रा जैसी सुंदर स्त्री की मृत्यु हो जाने के बाद कुछ लोगों ने उसके मृत:देह के साथ संभोग किया था। आल्डस हक्सली ने अपने विख्यात उपन्यास `ब्रेव न्यू वर्ल्ड' में टेस्टट्यूब बेबी की कल्पना पर आधारित मानववंश की कल्पना 1920 के अरसे में की थी। दसबारह वर्ष के बाद आल्डस हक्सली ने `ब्रेव न्यू वर्ल्ड रिविजिटेड' शीर्षक से एक मजेदार निबंध संग्रह प्रकाशित किया था। उसमें नयी पीढ़ी की आकांक्षा प्रकट करनेवाला एक विधान आज भी याद है:

हमें कलर टी.वी. दो। हमें खाने के लिए हेमबर्गर दो और हाँ स्वतन्त्रता की नापसंद बात से हमें खलल पहुंचाना नहीं।

अमरिका की तत्कालीन पुरानी पीढ़ी का जोरदार सूत्र था। `Give me liberty or give me death.' ऐसे तेज सूत्र के स्थान पर वहाँ की नयी पीढ़ी सुखवादी सूत्र पेश करके हक्सली बदल रहे समय की बात करना चाहते थे। हमारे यहाँ भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। गुलाब के स्थान पर गुलाब का इत्र, इलायची के बदले इलायची का एसेंस,नारंगी के रस की जगह गोल्डस्पॉट,शाला की जगह ट्यूशन क्लास...फेहरिस्त लंबी होने जा रही है। सूरत क्षेत्र से होरा(ज्वार के ताजे हरे दानों सहित बाली को धूनी में सेंककर पके हुए दाने निकालकर खाये जाते हैं) अदृश्य हो चुका है,अब कतारगाम की सेम भी उक्ति में रही नहीं है। कच्छ में हर वर्ष बारिश होती नहीं है। दो-तीन वर्ष बीते जब वर्षा हो तब गाँव के लोग खुशी के मारे फुले नहीं समाते। उस समय घर में 'मेघलड्डू' बनते हैं और लोग अपनी खुशियाँ बांटते हैं। बांटने के लिए मनुष्य के पास खुशियों से बढ़कर क्या कोई चीज है? सब कुछ सिंथेटिक बनता है,पर खुशियाँ भी अब सिंथेटिक?

मेहमान को थाली में सारे व्यंजन परोसे जाते हैं पर उसमें एक अदृश्य व्यंजन भी है,उसका नाम है `हुलास।' उसके बिना सारे व्यंजन फीके! सिंथेटिक वस्त्र में कहीं भी सिलवटें नहीं आती। खादी वस्त्र में तेजी से सिलवटें आ जाती हैं,क्योंकि खादी जीवंत वस्त्र है। समुद्र दूर रह जाता है और छोटा सा एक्वेरियम अब ड्रोइंगरूम में जगह बना लेता है। प्लास्टिक के फूल पर क्या तितली कभी बैठेगी? यदि बैठे तो वह तितली भी प्लास्टिक की ही होगी। डेन्मार्क में कईं शोप्स में पुरुष और स्त्रियों के गुप्तांग बिकते हुए देखा था। मैथुन के लिए पुरुष को स्त्री की जरूरत पड़े नहीं और स्त्री को पुरुष की जरूरत पड़े नहीं,ऐसे साधन(उपकरण) बाजार में जगह जगह बिकते देखे हैं। गणिकायें अब बेरोजगार हो जाएँ, वह दिन अब दूर नहीं है। स्त्री की जगह पर जिंदा स्त्री से ज्यादा सौंदर्यवान गुड़िया दुकानों में विक्रय होगी। इस प्रकार सिंथेटिक सेक्स भी अब वास्तविक हो रहा है। उसमें संगीत की सहायता मिलेगी और विदेश में नौकरी करनेवाले पुरुष की विरह वेदना भी शायद सिंथेटिक हो जाएगी। आनेवाली सेक्सक्रांति में स्त्री-पुरुष सहजीवन नया डायमेंशन प्राप्त करने की तैयारी कर रहा है। सिंथेटिक मैथुन ज्यादा से ज्यादा आनंदप्रद हो,उसकी तैयारियां चल रही हैं। विरह कैसा? और बात कैसी? और फिर प्रेमपत्र किस खेत की मूली है? विवाहेतर संबंध भी शायद अतीत की घटना मानी जाएगी। ओर्गेनिक खेती की भांति ओर्गेनिक सेक्स के लिए क्रांति का प्रारम्भ होगा। `ओर्गेनिक लव' जैसा शब्दप्रयोग ऐसी क्रांति के प्रारम्भ का छड़ीदार कहलाएगा।

क्या इस चौमासे में आकाश से टपकी हुई एक बूंद नही सीधे आपके शरीर पर गिरी है? क्या आपके पैर की एडी ने इस चौमासे में भीगने के लिए वर्षाजल की छूअन महसूस की है? घर में लड्डू के लिए तले जा रहे मुठियों के आटे में गरम घी और गुड के मिलने से जो दिव्य महक फैली और उसकी वजह से क्या आपका मूड कभी बदला? उस बदले हुए मूड के कारण आपने पत्नी को प्यार से सने आक्रमण द्वारा पत्नी को कभी मूड में लाये है? यदि ऐसा कुछ हुआ हो, तो आप खुशनसीब हैं। बरखुरदार! क्या आपने 'मेघ लड्डू' बांटने जैसा हर्ष कभी अनुभव किया?

यह वर्षाकाल सम्पन्न हो,तब आप अवश्य डांग के अरण्य प्रदेश के प्रवास का आयोजन कीजिये। वहाँ अनेक टेकरियों से झरते हुए जलप्रपात को विस्मय के दिव्यचक्षुओं से देखिएगा। उस टेकरी पर कोई आदिवासी युगल अपनी कुटिया में आपके लिए गरमागरम भजिए (पकोड़े) तलता हुआ दिखाई देगा। आप उस युगल को दुहरी टिप देकर ये भजिए अवश्य खाना। ऐसी खुशी पानेवाले और बांटनेवाले शायद आप आखिरी `सुधरे हुए'(विकसित) इंसान होंगे। आदिवासी कन्या की मुग्धता प्रकट करनेवाली मुस्कान अब डांग में भी खत्म होने पर है। अब वह जंगल में भी देखने को नहीं मिलेगी। डांग अर्थात् राम के युग का दंडकारण्य! दंडकारण्य की शबरी अब भोली नहीं रही है। शबरी की मुस्कान निहारने के लिए नगर की सारी कृत्रिमताओं को छोडकर दंडकारण्य अवश्य जाएँ। शायद आपको वहाँ शबरी दिखाई दे।

समझदारी:

ज्यां पोल सार्त्र की पुस्तक `Being and nothingness' पठनीय है। सार्त्र पेरिस के एक काफ़े में अपने खास मित्र पीअरे से मिलने के लिए गए थे। सार्त्र की चेतना काफे को किसी ऐसी स्थूल जगह के रूप में नहीं देखती,जहां कॉफी पीने के लिए कई लोग जमा हुए हों,सार्त्र के लिए तो यह एक ऐसा स्थान है,जहां खास मित्र पीअरे नहीं है। काफे बिना पीअरे सार्त्र के लिए व्यर्थ है।(खुशबू रहित गुलाब सा!)

------००------

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें